जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 47 संख्याः 328 प्रभात कोटा, शनिवार 10 सितम्बर, 2022 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

क्वीन ऐलिज़ाबैथ के निधन के बाद किंग चार्ल्स तृतीय शुक्रवार को पहली बार बकिंघम पैलेस पहुंचे। स्कॉटलैण्ड से लंदन पहुंचे किंग चार्ल्स तृतीय को एक आधिकारिक रोल्स-रॉयस कार में शाही निवास ले जाया गया। कार के राजमहल के गेट पर पहुंचते ही भारी भीड़ ने उनका स्वागत किया। वे लोगों का अभिवादन करने के लिए कार से बाहर निकले। उन्होंने महारानी ऐलिज़ाबैथ द्वितीय के सम्मान में पैलेस के बाहर आम लोगों द्वारा रखे गए फूलों को भी देखा। उन्होंने लोगों से बात की और हाथ भी मिलाया। कुछ लोगों ने किंग चार्ल्स के लिए नारे भी लगाये। किंग चार्ल्स ने हाथ उठाकर अपने समर्थकों एवं ब्रिटेन की जनता का अभिवादन किया। उल्लेखनीय है कि, महारानी ऐलिज़ाबैथ द्वितीय का गुरुवार को स्कॉटलैण्ड के बालमोरल कासल में निधन हो गया। क्वीन को श्रद्धांजलि देने के लिए सुबह से ही बड़ी संख्या में लोग फूल लेकर बकिंघम पैलेस पहुंचने लगे। किंग चार्ल्स शुक्रवार रात को ब्रिटेन की जनता को संबोधित करेंगे।

क्वीन ऐलिज़ाबैथ के शव को मृत्यु के 10 दिन बाद विंडसर कासल में दफनाया जायेगा

क्वीन के अंतिम संस्कार के बाद ही किंग चार्ल्स को राजा बनाने की औपचारिक घोषणा होगी

- किंग चार्ल्स के राजा बनने के बाद ब्रिटेन में प्रशासनिक रूप से कुछ बदलाव भी होंगे। बैंक नोट एवं लैटरबॉक्स और टिकटों पर क्वीन ऐलिज़ाबैथ की छवि और प्रतीक चिन्ह को नए राजा चार्ल्स तृतीय के साथ बदल दिया जायेगा।
- किंग चार्ल्स, यानि हैड ऑफ स्टेट, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के साथ हर सप्ताह औपचारिक बैठक करेंगे। हालांकि हैड ऑफ स्टेट राजनीतिक रूप से पूर्णतः तटस्थ रहते हैं।
- अंतिम संस्कार के बाद क्वीन ऐलिज़ाबैथ को विंडसर कासल के किंग जॉर्ज षष्ठम मैमोरियल चैपल में दफनाया जाएगा।
- ब्रिटेन में आधिकारिक हलकों में महारानी के निधन को ''ऑपरेशन लंदन ब्रिज'' कोडनेम दिया गया है। यह एक तरह का प्रोटोकॉल है, जिसे बकिंघम पैलेस ने गुरुवार को 96 वर्षीय क्वीन के निधन की घोषणा के बाद लागू किया था।

लंदन/नई दिल्ली, 9 सितम्बर। ब्रिटेन की क्वीन ऐलिज़ाबैथ द्वितीय का अंतिम संस्कार उनके निधन के 10 दिन बाद यानी 18 सितम्बर को होगा। वर्तमान में उनके शव को लंदन के बकिंघम पैलेस में रखा गया है। निधन के पांचवे दिन के बाद उनके ताबूत को बकिंघम पैलेस से वेस्टमिंस्टर के पैलेस तक औपचारिक मार्ग से ले जाया जाएगा। इस दौरान लोग उनके अंतिम दर्शन कर सकेंगे। यह स्थल प्रतिदिन 23 घंटे तक खुला रहेगा।

अंतिम संस्कार का दिन राष्ट्रीय शोक का दिन होगा। जिसमें वेस्टमिंस्टर एब्बे में होने वाली सेवा और पूरे ब्रिटेन में दोपहर में दो मिनट का मौन रखा जाएगा। अंतिम संस्कार के बाद क्वीन ऐलिज़ाबैथ को विंडसर कैसल के किंग जॉर्ज षष्ठम मैमोरियल चैपल में दफनाया जाएगा।

जानकारी के मुताबिक, महारानी के निधन के बाद नई प्रधानमंत्री बनी लिज ट्रस को फोन करके सूचना दी गई। इसके बाद शाही परिवार ने सारी तैयारियों के तहत महारानी की आंखों को बंद किया। इसके बाद प्रिंस चार्ल्स को नया राजा घोषित किया गया। हालांकि, प्रिंस चार्ल्स का औपचारिक राज्याभिषेक बाद में किया जाएगा। इसी बीच किंग चार्ल्स के नया किंग घोषित होने पर उनके परिवार के सभी सदस्य उनके हाथों को चूमकर धन्यवाद देंगे।

ब्रिटेन के राजप्रमुख के निधन पर नियमानुसार प्रधानमंत्री को पहला बयान जारी करना होता है। इसी परंपरा के तहत ब्रिटिश प्रधानमंत्री लिज़ ट्रस ने अपना पहला बयान जारी किया। इसमें उन्होंने महारानी को श्रद्धांजलि दी और कहा कि 'दिवंगत महारानी अपने पीछे महान विरासत को छोड़कर गई हैं। उन्होंने देश को स्थिरता और ताकत भी दी है।

ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय के निधन के बाद बंकिंघम पैलेस के मुख्य द्वार पर शोक में पहने जाने वाली पोशाक पहनकर सेवक खड़ा रहेगा। वह दरवाजे पर एक नोटिस लगाएगा। निधन के बाद यूके की संसद, स्कॉटलैण्ड, वेल्स और नदर्न आयरलैण्ड की संसद को स्थगित रखा जाएगा।

क्वीन ऐलिज़ाबैथ द्वितीय के निधन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चीन के रईसों का पलायन

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। चीन के अरबपतियों ने देश को एक पावर हाउस बनाने में मदद की थी। अब ये लोग लो-प्रोफाइल हैं और चुपचाप देश छोड़कर जा रहे हैं। यह खबर न्यूयॉर्क टाइम्स ने दी है।

बाहर के देशों के लिए जो नवीनतम

- चीन जिन अरबपतियों की बदौलत आर्थिक महाशक्ति बन कर उभरा था, वे अब मजबूरन देश छोड़ रहे हैं, क्योंकि चर्चा है कि, चीन पुनः सरकार नियंत्रित ''सिस्टम'' की ओर लौट रहा है।

पलायन हुआ है, उसमें चीन के जाने-माने दो उद्यमियों पैन शियी और झैंग शिन हैं, उन्होंने अपने रीयल एस्टेट एम्पायर ''सोहो चाइना'' जो मुश्किलों से जूझ रहा है, से इस हफ्ते इस्तीफा दे दिया। पति-पत्नी की यह टीम वैश्विक महामारी के दौरान अमेरिका चली गई थी और उन्होंने दूरस्थ देश में रह कर ही अपने बिज़नैस का प्रबंधन करने की कोशिश की।

उनके त्यागपत्र निजी उद्यमियों की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मोदी सत्यपाल मलिक पर इतने दयावान क्यों हैं?

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। मेघालय के राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने राजपथ का नाम बदलकर कर्त्तव्य पथ करने के निर्णय का उपहास कर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को एक बार फिर शर्मिंदा कर दिया है। मलिक की टिप्पणियां इतनी आश्चर्य जनक नहीं हैं, जितनी कि इस सवाल को लेकर जिज्ञासा है आदतन आलोचना करने वाले के रूप में देखे जाने के बावजूद राज्यपाल मलिक, प्रधानमंत्री और सरकार की घुड़की से क्यों बचते आ रहे हैं।

- मेघालय के राज्यपाल लगातार मोदी पर कटाक्ष करते रहे हैं और अब तो खिल्ली उड़ाते हुए मलिक ने कहा है कि, मोदी को हर दो-तीन दिन में एक शगूफा छोड़ने की आदत है, इसलिये राजपथ का नाम कर्त्तव्य पथ किया।
- मलिक ने यह भी कहा कि, अगर किसानों को एम.एस.पी. नहीं मिली तो, एक बार फिर किसान व सरकार आमने-सामने होंगे और मुझे भी राज्यपाल पद से इस्तीफा देकर इस आंदोलन का नेतृत्व करना पड़ेगा।
- सामान्य तौर पर, मोदी की आलोचना करना खतरे से खाली नहीं माना जाता। पर, मलिक लगातार यह ''दुःसाहस'' कर रहे हैं, लेकिन अभी तक उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई।
- कई चर्चाएं हैं, ऐसा क्यों हो रहा है।

पार्टी या शासन संरचना के भीतर प्रधानमंत्री की आलोचना होती है। बेहद दुर्लभ घटना क्रम है। मोदी सरकार द्वारा अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों के विरूद्ध केन्द्रीय जांच एजेंसियों के दुरूपयोग किए जाने के आरोप समय-समय पर लगते रहे हैं, लेकिन प्रधानमंत्री को भी पार्टी या संघ परिवार के भीतर अपने असन्तुष्टों को नहीं बख्शने वाले और प्रतिशोधात्मक रूख रखने के लिए जाना जाता है। मलिक एक संवैधानिक पद पर और उन्हें पद से हटाने के लिए राष्ट्रपति मुर्मू को मंत्रिमण्डल की सिफारिश की अनिवार्यता होगी। लेकिन मोदी सरकार मलिक को राजनीतिक गतिविधियों में रत रहने के कारण पद से हटाने से गुरेज कर रही है।''

मेघालय के राज्यपाल एक से अधिक बार प्रकट रूप से लक्ष्मण रेखा पार कर चुके हैं। राजपथ के नाम परिवर्तन का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री को दो या तीन दिन में कोईना कोई उद्घाटन करने की आदत पड़ गई है।'' राजपथ का नाम बदलने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि इस रोड़ का नाम ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों द्वारा नहीं रखा गया था, लेकिन प्रधानमंत्री ने इस पथ का नाम बदलकर कर्त्तव्य पथ रख दिया, जैसे कि उद्घाटन करने के अलावा उनके पास कोई काम ही ना हो।'' इससे पहले बुलंद शहर में बोलते हुए मेघालय के राज्यपाल ने कहा था कि यदि मिनिमम सपोर्ट प्राइस (एम.एस.पी.) पर किसानों की मांग नहीं मानी गई तो सरकार और किसान संगठनों के बीच एक और बड़ा टकराव होगा। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में वे राज्यपाल पद से इस्तीफा देकर किसानों के संघर्ष में कूद पड़ेंगे। इससे पहले कई मौकों पर मलिक ने प्रधानमंत्री को घमड़ी बताया था। पिछले माह नूह के कीरा गांव में उन्होंने यहां तक आरोप लगाया था कि ''एम.एस.पी. इसलिए लागू नहीं की जा रही क्योंकि प्रधानमंत्री

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिलकीस बानो केस

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। सर्वोच्च न्यायालय ने शुक्रवार को गुजरात सरकार से कहा कि बिलकीस बानो केस से सम्बन्धित कार्यवाहियों का पूरा

- सुप्रीम कोर्ट ने बिलकीस बानो केस की प्रक्रिया से संबंधित संपूर्ण रिकॉर्ड मंगवाया है, जिसमें बिलकीस का बलात्कार करने और परिजनों की हत्या करने वाले 11 अपराधियों को गुजरात सरकार द्वारा माफ करने की प्रक्रिया भी शामिल है।

रिकॉर्ड दो सप्ताह के अन्दर भेजा जाये। इस में इस केस के उन 11 अपराधियों को रिहा करने की माफी प्रक्रिया भी शामिल है, जो उम्र कैद काट रहे थे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तेलंगाना भी पश्चिम बंगाल की राह पर!

राज्यपाल तमिलिसाई सौंदरराजन व मु.मंत्री के बीच झगड़े चरम पर पहुंचे

-लक्ष्मण वैंकट कुची -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। तेलंगाना का राज्यपाल कार्यालय राज्य सरकार के साथ चल रहे तनाव के कारण तेजी से चर्चा का केन्द्र बन गया है, ठीक वैसे ही, जैसे उपराष्ट्रपति बनने से पहले पश्चिम बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ एवं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के बीच तनातनी चला करती थी।

- राज्यपाल ने प्रेस के सामने कहा, मु.मंत्री उनका अपमान व निरादर करने का कोई मौका नहीं छोड़ते हैं।
- मु.मंत्री की ओर से उनकी पुत्री कविता, जो एम.एल.सी. भी हैं, तथा उनके मंत्रिमण्डल के अन्य सदस्य, राज्यपाल पर केन्द्रीय सरकार का एजेन्ट होने का आरोप लगा रहे हैं तथा यह भी कह रहे हैं कि, राज्यपाल ने राजभवन को राजनीति का अड्डा बना दिया है तथा वे राज्य सरकार को बदनाम करने की साजिश रचती रहती हैं।

मज़ेदार बात यह है कि तेलंगाना की राज्यपाल तमिलिसाई सौंदरराजन ने अपनी यह शिकायत सार्वजनिक भी कर दी है कि तेलंगाना राष्ट्र समिति के नेतृत्व वाली राज्य सरकार उनका एवं राज्यपाल कार्यालय का जानबूझकर अपमान कर रही है तथा ''एक भाजपा नेता के रूप में'' उनके काम किये जाने को लेकर, टी.आर.एस. के नेता उनकी तीखी आलोचना कर रहे हैं। इन दोनों संवैधानिक पदाधिकारियों के बीच का तनाव उस समय बढ़ना शुरू हुआ, जब राज्यपाल ने राज्य सरकार से कुछ फाइलें तथा खास जानकारियाँ मँगवाना और जन-सुनवाई के लिये जन-दरबार लगाना शुरु कर दिया। राज्य सरकार ने राज्यपाल के इस कदम को अपने-प्रशासन-कार्यों में ''हस्तक्षेप'' के रूप में लिया।

गुरुवार को राज्यपाल पद पर उनके तीन वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में मनाये गये समारोह में टी.आर.एस. सरकार द्वारा की गई उनकी अवमानना को राज्यपाल ने स्वयं ही सार्वजनिक कर दिया।

राज्यपाल सौंदरराजन ने मीडिया से शिकायत की कि जिस दिन से वे राज्यपाल बनी हैं, उसी दिन से वे अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठापूर्वक पूरा कर रही हैं, लेकिन इसके बावजूद राज्य सरकार

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पूजा स्थल एक्ट

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। सर्वोच्च न्यायालय ने शुक्रवार को उन याचिकाओं का जवाब देने के लिये केन्द्र को दो सप्ताह का समय दे दिया, जिनमें 1991 में बने प्लेसेज ऑफ वर्शिय एक्ट को चुनौती दी गई है। अदालत ने जमीयत उलेमा-ए-हिन्द को भी इस केस में शामिल होने की अनुमति प्रदान

- सुप्रीम कोर्ट ने इस विधेयक पर जवाब देने के लिए केन्द्र सरकार को दो सप्ताह का समय दिया।

कर दी। इस अधिनियम को इसलिये चुनौती दी गई है क्योंकि इसमें किसी पूजा स्थल पर पुनः दावा प्रस्तुत करने या 15 अगस्त, 1947 वाली इसकी स्थिति में परिवर्तन करने के लिये, मुकदमा दायर करने का निषेध किया गया है। याचिका में आरोप लगाया गया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

''क्वीन'' को ''हैड ऑफ द स्टेट'' कहलाने का पूरा हक था

जब 1952 में वे सिंहासन पर बैठीं तब इंग्लैण्ड ''युवा'' था। विश्व युद्ध में जीत की खुमारी थी। औद्योगिक उत्पादन बढ़ना शुरू हो गया था, ब्रिटेन का राजनीतिक महत्व प्रभुत्व वाकई में आसमान छू रहा था

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। क्वीन ऐलिज़ाबेथ के बिना इंग्लैंड की कल्पना करना भी कठिन है। जहां तक याददाश्त जाती है ब्रिटेन में उनका राज रहा है, 72 वर्ष तक। यह समय वैसा ही है जब 1901 में क्वीन विक्टोरिया का निधन हुआ था।

उनके शासन की शुरुआत तब हुई थी जब इंग्लैंड एक बड़ी ताकत था। खासकर दूसरे विश्वयुद्ध की शानदार जीत के बाद। ये वो दिन थे जब एक निशिंचतता थी। ब्रिटेन की जनसंख्या युवा थी। इसका अनुमान उस दौर की तस्वीरों से लगाया जा सकता है जिनमें क्वीन को अपनी प्रजा से मिलते दिखाया गया है इनमें से अधिकांश बच्चे थे।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था रिकवरी मोड पर थी। रोजगार और लोगों की आय धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। रोमांच का भाव था और भविष्य को लेकर उम्मीदें थीं।

- अब 72 साल बाद, ब्रिटेन का राजनीतिक महत्व सिकुड़ता जा रहा है, अनिश्चितता हवा में है।
- इस पूरी यात्रा के दौरान इंग्लैण्ड को नैराश्य से बचाकर रखने के लिये, बिना शालीनता खोये ब्रिटेन की मूल सभ्यता को नहीं डूबने देने के कारण, इंग्लैण्ड ''क्वीन'' का सदा आभारी रहेगा।
- ''क्वीन'' के ज़हन में, भारत विशेष महत्व रखता था और उससे भी सर्वोच्च था कलकत्ता। सन् 1950 के दशक में जब वे ब्रिटिश साम्राज्य की कॉलोनियों का दौरा करते हुए कलकत्ता पहुंची थीं, तो कलकत्ता वासियों ने भी खुले दिल से स्वागत किया था, आखिर ब्रिटिश साम्राज्य की पहली राजनीतिक राजधानी व ''कॉमर्शियल कैपिटल'' रहा था कलकत्ता।
- अंत तक, दार्जीलिंग की चाय की पहली खेप, नीलामी से भी पहले क्वीन को पेश होती थी। कलकत्ता रेस कोर्स क्लब, आज भी ब्रिटिश राज के वैभव व परम्परा को गले से लगाकर जी रहा है।

पुराने साम्राज्य की तुलना में राजनीतिक अवधारणा विस्तृत हो चुकी थी और उपनिवेश स्वतंत्र हो रहे थे, लेकिन शाही एकजुटता का बचा-खुचा भाव अभी विद्यमान था। राष्ट्रमण्डल अपने भाव और क्रिया दोनों में सक्रिय था।

अपने राज्याभिषेक के कुछ समय बाद ही क्वीन ने भारत सहित पूर्व उपनिवेशों की शाही यात्रा की। इस संवाददाता को अपने बचपन की वह याद अब तक ताजा है, जब क्वीन की मोटरकारों का काफिला ग्रीन कलकत्ता मैदान में से होकर गुजरा था और लोग लाइन में खड़े होकर, हाथ हिलाते हुए उनका अभिवादन कर रहे थे।

पचास के दशक की शुरुआत में सर्दी के उस दिन उन्होंने वो किया जैसा करना उन्हें प्रायः पसंद होता था। घुड़ दौड़ करना। रॉयल कलकत्ता टर्फ क्लब, जिसे आर.सी.टी.सी. के रुप में अधिक जाना जाता है, तब अपनी समृद्धि के चरमोत्कर्ष पर था। कलकत्ता रेस कोर्स को एक ठेठ इंग्लिश बॉर्डर से चिन्हित किया गया, हरे रेस कोर्स और उसके आसपास की सड़कों के बीच एक नीची लकड़ी की नीची चारदीवारी को सफेद रंग से पोता गया।

आर.सी.टी.सी. एक ने ऑफ वाइट ग्रैण्ड स्टैण्ड बनाकर अपनी हैसियत अनुरूप कार्य किया। भारत में ब्रिटेन के सभी निवेशों का मुख्यालय होने के कारण बड़ी कम्पनियों के सी.ई.ओ. कलकत्ता में आयोजित क्वीन के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए जमा थे। उनकी रॉल्स रॉयस और बड़ी अमेरिकन शेवरले कारों की कतारें रेस कोर्स रोड के सहारे लगी हुई थीं। बहुत बाद, इन दिनों तक अन्य संबंध भी थे। प्रत्येक नए सीज़न में दार्जीलिंग की चाय की पहली खेप, महंगी कीमतों पर ऑक्शन करने से पहले ही क्वीन के पास भेजी जाती थी। पुराने लॉर्ड इंचकेप आसाम कम्पनी के मालिक थे और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नूपुर की गिरफ्तारी नहीं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 सितम्बर। चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया (सी.जे.आई.) उदय उमेश ललित की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों वाली एक बैंच ने एडवोकेट अबू सोहेल की ओर

- सुप्रीम कोर्ट ने हज़रत मोहम्मद पर की गई टिप्पणी के संदर्भ में नूपुर शर्मा की गिरफ्तारी की मांग करने वाली याचिका ठुकरा दी व कहा कि इसके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं।

दायर की गई एक याचिका को शुक्रवार को खारिज करते हुए कहा कि वे उसे वापस ले लें। इस याचिका में टेलीविजन डिबेट में भाजपा प्रवक्ता नूपुर द्वारा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)